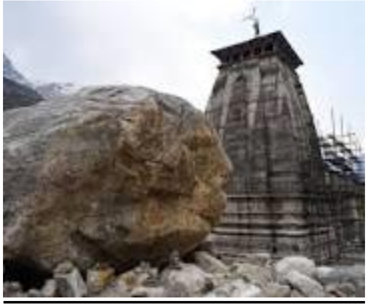

केदारनाथ मंदिर और भीमशीला

भीमशीला ने अपने जन्मका रहस्य बताया, " जब भारी बरसातसे ऊँचे पहाडोंकी चट्टाने गिरकर फिसलकर तेजीसे निचे मंदिरकी ओर आ रही थी तब ईश्वरने सबसे पहले मुझे बनाकर भेज दिया. ताकि मै मंदिर का नुकसान होनेसे बचा सकूँ. मै भी ईश्वरकी कृति हूँ".

उसने फिर यह कहा, "ईश्वर अपने भक्तों के भावनाओं की कदर करते हैं चाहे भक्त सामने हो या ना हो. जब मंदिर के कबाड़ बंद थे तभी, भरी आंधी तूफान बरसात ने पहाड़ों की चट्टानें तोड़कर सारे पत्थर और मिट्टी जमीन पर गिरा दी; तब इससे मंदिर को चोट पहुंचती. वह लगातार गिरनेवाले छोटेबड़े पत्थर शायद मंदिरको तकलीफ देते मगर ईश्वर ने मुझे बड़ी शीला बनाकर मंदिर के पास रुकवा दिया; और बाद में ऊपरसे जो मिट्टी और छोटे पत्थर आए थे वह शीला (मुझ) तक रुक गए. मंदिर तक जा नहीं पाए. और भक्तों का मंदिर सुरक्षित रहा। ईश्वर अपने भक्तोंकी और उनके कृतिकी सदैव रक्षा करते हैं।

उनके न होते हुए भी!"

तात्पर्य:

सृष्टिकी हर चीज़ खास वजह से उस जगह पर होती है.

ईश्वर अपने भक्तों के भावनाओं की कदर करते हैं चाहे भक्त सामने हो या ना हो.